''मीठे बच्चे – तुम यहाँ अपनी राजाई तकदीर बनाने आये हो, जितना याद में रहेंगे, पढ़ाई पर ध्यान देंगे उतना तकदीर श्रेष्ठ बनती जायेगी''

प्रश्नः- संगम पर किस श्रीमत का पालन कर 21 जन्मों के लिए तुम अपनी तकदीर श्रेष्ठ बना लेते हो?

उत्तरः- संगम पर बाप की श्रीमत है – मीठे बच्चे निर्विकारी बनो। देही-अभिमानी बनने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। कभी कोई पाप कर्म नहीं करना तो 21 जन्मों के लिए तकदीर श्रेष्ठ बन जायेगी।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) मनुष्य से देवता बनने के लिए जो भी आसुरी स्वभाव है, झूठ बोलने की आदत है, उसका त्याग करना है। दैवी स्वभाव धारण करना है।

2) घर चलने के लिए पवित्र जरूर बनना है। माया के तूफान आते भी कर्मेन्द्रियों से कभी कोई विकर्म नहीं करना है।

वरदानः- अधिकारीपन की स्थिति द्वारा बाप को अपना साथी बनाने वाले सदा विजयी भव

बाप को साथी बनाने का सहज तरीका है – अधिकारीपन की स्थिति। जब अधिकारीपन की स्थिति में स्थित रहते हो तब व्यर्थ संकल्प वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल में वा अनेक रसों में बुद्धि डगमग नहीं होती। बुद्धि की एकाग्रता द्वारा सामना करने, परखने व निर्णय करने की शक्ति आ जाती है, जो सहज ही माया के अनेक प्रकार के वार से विजयी बना देती है।

स्लोगनः- राजयोगी वह हैं जो सेकण्ड में सार से विस्तार और विस्तार से सार में जाने के अभ्यासी हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

ब्रह्मा बाप ने सम्पूर्ण बनने के लिए अपने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किये, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा – सम्पूर्ण फरिश्ता बन गये। तो लक्ष्य रखो मुझे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना ही है। कुछ भी पुरुषार्थ करना पड़े लेकिन निश्चित है कि बाप समान बनना ही है।

''मीठे बच्चे – बाप द्वारा जो नॉलेज मिली है वह बुद्धि में कायम रखनी है, सवेरे-सवेरे उठ स्वदर्शन चक्रधारी बन विचार सागर मंथन करना है''

प्रश्नः- इस ईश्वरीय पढ़ाई का लॉ (कायदा) कौन-सा है? उसके लिए कौन-सा डायरेक्शन मिला हुआ है?

उत्तरः- इस ईश्वरीय पढ़ाई का लॉ है – नियमित पढ़ना। कभी पढ़ना, कभी न पढ़ना यह लॉ नहीं है। बाबा ने पढ़ाई के लिए बहुत प्रबन्ध दिये हैं। पढ़ाई (मुरली) यहाँ से पोस्ट में जाती है। 7 दिन का कोर्स लेकर कहाँ भी पढ़ सकते हो। पढ़ाई कभी मिस नहीं करनी है।

गीतः- ओम् नमो शिवाए...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सर्वोत्तम कुल की स्मृति से गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कभी भी सद्गुरू की निंदा नहीं करानी है।

2) श्रीमत पर भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना और बनाना है। जब भी फुर्सत मिले तो विचार सागर मंथन जरूर करना है।

वरदानः- सदा कल्याणकारी भावना द्वारा गुणग्राही बनने वाले अचल अडोल भव

अपनी स्थिति अचल अडोल बनाने के लिए सदा गुणग्राही बनो। अगर हर बात में गुणग्राही होंगे तो हलचल में नहीं आयेंगे। गुणग्राही अर्थात् कल्याण की भावना। अवगुण में गुण देखना इसको कहते हैं गुणग्राही इसलिए अवगुण वाले से भी गुण उठाओ। जैसे वह अवगुण में दृढ़ है ऐसे आप गुण में दृढ़ रहो। गुण का ग्राहक बनो, अवगुण का नहीं।

स्लोगनः- अपना सब कुछ बाप को अर्पण कर सदा हल्के रहने वाले ही फरिश्ते हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

बाप समान बनने के लिए ब्रह्मा बाप को फॉलो करते चलो। सोचो, ब्रह्मा बाप सम्पूर्ण कैसे बने? उनकी क्या विशेषता रही? सम्पूर्णता का विशेष आधार क्या रहा? ब्रह्मा बाप ने अपना हर समय सफल किया। श्वांस-श्वांस, सेकण्ड-सेकण्ड सफल किया। तो बाप समान बनने के लिए लक्ष्य रखो कि सफल करना है और सफलतामूर्त बनना है।

''मीठे बच्चे – ज्ञानवान बनो तो धनवान बन जायेंगे, जगदम्बा ज्ञान-ज्ञानेश्वरी ही राज-राजेश्वरी बनती है''

प्रश्नः- बाप को अपने बच्चों पर तरस पड़ता है इसलिए श्रेष्ठ तकदीर बनाने के लिए कौन-सी श्रीमत देते हैं?

उत्तरः- मीठे बच्चे – सिर पर जो पापों का बोझा है, उसे मौत के पहले याद की यात्रा में रहकर उतार दो। कोई भी विकर्म नहीं करो। बाप आये हैं तुमको जमघटों की फाँसी से छुड़ाने, इसलिए अब ऐसा कोई कर्म नहीं करना।

गीतः- रात के राही थक मत जाना...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) ऐसी अवस्था बनानी है जो अन्तकाल में एक बाप की याद आये। दूसरा कोई याद न आये, बुद्धि में रहे यह सब विनाश होने वाला है।

2) अपने आप को करेक्ट करना है, इस अन्तिम जन्म में पवित्र जरूर बनना है। डर रखना है कि हमसे कोई पाप कर्म न हो जाए।

वरदानः- ड्रामा की ढाल को सामने रख खुशी की खुराक खाने वाले सदा शक्तिशाली भव

खुशी रूपी भोजन आत्मा को शक्तिशाली बना देता है, कहते भी हैं – खुशी जैसी खुराक नहीं। इसके लिए ड्रामा की ढाल को अच्छी तरह से कार्य में लगाओ। यदि सदा ड्रामा की स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते, खुशी गायब हो नहीं सकती क्योंकि यह ड्रामा कल्याणकारी है इसलिए अकल्याणकारी दृश्य में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा समझ सदा खुश रहेंगे।

स्लोगनः- परचिंतन और परदर्शन की धूल से दूर रहने वाले ही सच्चे अमूल्य हीरे हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

सम्पन्नता वा सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए देह के अभिमान से सम्पूर्ण समर्पण होना है। देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए तब कहा जायेगा सर्व समर्पणमय जीवन, ऐसे जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाले हैं उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जाती है और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तब साथ जायेंगे।

''मीठे बच्चे – तुम्हें साइलेन्स में रहकर एक बाप को याद करना है, इसमें घण्टे आदि बजाने की दरकार नहीं हैं''

प्रश्नः- किस बात में बाप समान बनो तो सब काम सिद्ध हो जायेंगे?

उत्तरः- जैसे बाप प्यार का सागर है वैसे बहुत-बहुत प्यारे बनो। क्रोध से काम बिगड़ता है, बनता नहीं इसलिए आँख दिखाना, जोर से बोलना, गर्म होना, इसकी दरकार नहीं है। शान्त रहना बहुत-बहुत अच्छा है। प्यार से बहुत काम सिद्ध हो सकते हैं।

गीतः- तुम्हीं हो माता पिता...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) विकारों का दान देकर वापिस नहीं लेना है। मुख से शुभ बोलना है, बहुत मीठा बनना है। बाप के समान प्यार का सागर बनकर रहना है।

2) साइलेन्स में रह बिना कौड़ी खर्चा विश्व की बादशाही लेनी है। बाप की याद में रह थोड़ा बहुत खर्चा कर 21 जन्मों की आमदनी करनी है।

वरदानः- त्रिकालदर्शी स्थिति द्वारा माया के वार से सेफ रहने वाले अतीन्द्रिय सुख के अधिकारी भव

संगमयुग का विशेष वरदान वा ब्राह्मण जीवन की विशेषता है – अतीन्द्रिय सुख। यह अनुभव और किसी भी युग में नहीं होता। लेकिन इस सुख की अनुभूति के लिए त्रिकालदर्शी स्थिति द्वारा माया के वार से सेफ रहो। अगर बार-बार माया का वार होता रहेगा तो चाहते हुए भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर नहीं पायेंगे। जो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर लेते हैं उन्हें इन्द्रियों का सुख आकर्षित कर नहीं सकता, नॉलेजफुल होने के कारण उनके सामने वह तुच्छ दिखाई देगा।

स्लोगनः- कर्म और मन्सा दोनों सेवा का बैलेन्स हो तो शक्तिशाली वायुमण्डल बना सकेंगे।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे हैं, जो भी परिस्थितियाँ सामने हैं, उन्हीं हालतों में रहते इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है, यह लक्ष्य रखो। आपका संगमयुगी सम्पूर्ण रूप शक्तियों और पाण्डवों के रूप में गाया हुआ है। जब इस स्वरूप में स्थित होंगे तब मालूम पड़ेगा कि हमारे भक्त कौन से हैं और प्रजा कौन सी है। जो प्रजा होगी वह न जदीक आयेंगे और जो भक्त होंगे वह पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे।

''मीठे बच्चे – यह मंजिल बहुत भारी है इसलिए अपना समय बरबाद न कर सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करो''

प्रश्नः- बच्चों की चढ़ती कला न होने का मुख्य कारण क्या है?

उत्तरः- चलते-चलते थोड़ा भी अहंकार आया, अपने को होशियार समझा, मुरली मिस की, ब्रह्मा बाप की अवज्ञा की तो कभी भी चढ़ती कला नहीं हो सकती। साकार की दिल से उतरा माना निराकार की दिल से भी उतरा।

गीतः- लाख जमाने वाले...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बापदादा से आफरीन लेने के लिए बाप के ऊंचे कार्य में पूरा-पूरा मददगार बनना है। बाबा को अपनी सेवाओं का समाचार देना है।

2) देह-अभिमान में आकर कभी भी बेअदबी नहीं करनी है। उल्टे नशे में नहीं आना है। अपना समय बरबाद नहीं करना है। सर्विस की युक्तियाँ रचनी हैं, सर्विसएबुल बनना है।

वरदानः- सदा रहम और कल्याण की दृष्टि से विश्व की सेवा करने वाले विश्व परिवर्तक भव

विश्व परिवर्तक वा विश्व सेवाधारी आत्माओं का मुख्य लक्षण है – अपने रहम और कल्याण की दृष्टि द्वारा विश्व को सम्पन्न व सुखी बनाना। जो अप्राप्त वस्तु है, ईश्वरीय सुख, शान्ति और ज्ञान के धन से, सर्व शक्तियों से सर्व आत्माओं को भिखारी से अधिकारी बनाना। ऐसे सेवाधारी अपना हर सेकण्ड, बोल और कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क सेवा में ही लगाते हैं। उनके देखने, चलने, खाने सबमें सेवा समाई हुई रहती है।

स्लोगनः- मान, शान का त्याग कर अपने समय को बेहद सेवा में सफल करना ही परोपकारी बनना है।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

अन्तिम सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करने के लिए स्वयं को मेहमान समझकर चलो। जो अपने को मेहमान समझते हैं वह व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त स्थिति में रहते हैं, उनका किसके साथ भी लगाव नहीं होता है। हम इस शरीर में, इस पुरानी दुनिया में मेहमान हैं, सिर्फ थोड़े समय के लिए यह शरीर काम में लाना है।

''मीठे बच्चे – संगदोष बहुत नुकसान करता, इसलिए संगदोष से अपनी बहुत-बहुत सम्भाल करते रहो, यह बहुत खराब है''

प्रश्नः- तीन प्रकार का बचपन कौन-सा है? किस बचपन को कभी भी नहीं भूलना?

उत्तरः- एक बचपन – लौकिक माँ बाप के पास जन्मते ही मिला। दूसरा बचपन – गुरू के शिष्य बनने पर हुआ और तीसरा बचपन – लौकिक माँ बाप को छोड़ अलौकिक माँ बाप के बने। अलौकिक बचपन अर्थात् ईश्वर की गोद के बच्चे। ईश्वर के बच्चे बने अर्थात् मरजीवा बन गये। इस अलौकिक बचपन को कभी भी भूलना नहीं। अगर भूल गये तो बहुत रोना पड़ेगा। रोना अर्थात् माया की चोट खाना।

गीतः- बचपन के दिन भुला न देना...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) जैसे बाप ज्ञान का, आनंद का, प्यार का सागर है ऐसे बाप समान बनना है और आप समान बनाने की सेवा करनी है। सबको ज्ञान का तीसरा नेत्र देना है।

2) ऐसा कोई भी संग नहीं करना है जो पछताना पड़े। संगदोष बहुत खराब है इसलिए अपनी सम्भाल करनी है। बाप से वर्सा लेने का पूरा पुरुषार्थ करना है।

वरदानः- सन्तुष्टता की विशेषता वा श्रेष्ठता द्वारा सर्व के इष्ट बनने वाले वरदानी मूर्त भव

जो सदा स्वयं से और सर्व से सन्तुष्ट रहते हैं वही अनेक आत्माओं के इष्ट व अष्ट देवता बन सकते हैं। सबसे बड़े से बड़ा गुण कहो, दान कहो या विशेषता वा श्रेष्ठता कहो – वह सन्तुष्टता ही है। सन्तुष्ट आत्मा ही प्रभूप्रिय, लोकप्रिय और स्वयं प्रिय होती है। ऐसी सन्तुष्ट आत्मा ही वरदानी रूप में प्रसिद्ध होगी। अभी अन्त के समय में महादानी से भी ज्यादा वरदानी रूप द्वारा सेवा होगी।

स्लोगनः- विजयी रत्न वह है जिसके मस्तक पर सदा विजय का तिलक चमकता हो।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

पाण्डवों का गायन है कि गल कर खत्म हो गये। पहाड़ों पर नहीं लेकिन ऊंची स्थिति में गल कर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गये अर्थात् उस अव्यक्त स्थिति में सम्पूर्णता को प्राप्त हुए, यह आप पाण्डवों का ही यादगार है।

विशेष दीपावली निमित्त अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

- आज बापदादा आप दीपकों की माला देखने के लिए आए हैं। दीपमाला के दिन जगे हुए दीपकों को देखते हो, जैसे जगा हुआ दीपक प्यारा लगता है वैसे अपनी यादगार को देख स्मृति आने से आप सभी भी विश्व के बाप और सारे विश्व के आत्माओं को प्यारे लगते हो।
- विशेष आत्माओं को खास अपने यादगार के दिन साक्षात्कार-मूर्त बन, साक्षात् बापदादा समान आत्माओं के प्रति अपनी कल्याण की भावना से, अपने रुहानी स्नेह के स्वरूप से, अपने सूक्ष्म शक्तियों द्वारा आत्माओं में बल भरना चाहिए।
- पहले अपने मन्सा संकल्पों के पोतामेल को चेक करो कि व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों के ऊपर कहाँ तक विजयी बने हैं? वाचा में कहाँ तक रुहानियत वा अलौकिकता वा आकर्षण आई है? कर्मों में कहाँ तक कर्मयोगी का, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्नेहयुक्त रूप लाया है?
- बाप के खज़ाने को अपने अनुभव द्वारा जो अपना बनाया ऐसा अपना बनाया हुआ ज्ञान रत्न एक दो को देना चाहिए जिससे वह आत्मा भी इससे सहज़ अनुभवी बन जाये, यह है खर्ची। तो एक-दो को ऐसी खर्ची देना चाहिए जो सदा के लिए याद रूप बन जाए।

वरदान:- दिव्य गुणों के आह्वान द्वारा अवगुणों को समाप्त करने वाले दिव्य गुणधारी भव

जैसे दीपावली पर श्री लक्ष्मी का आह्वान करते हैं ऐसे आप बच्चे स्वयं में दिव्य गुणों का आह्वान करो तो अवगुण आहुति रूप में खत्म होते जायेंगे। फिर नये संस्कारों रूपी नये वस्त्र धारण करेंगे। अब पुराने वस्त्रों से ज़रा भी प्रीत न हो, जो भी कमजोरियाँ, कमियाँ, निर्बलता, कोमलता रही हुई है – वो सब पुराने खाते आज से सदाकाल के लिए समाप्त करो तब दिव्यगुणधारी बनेंगे और भविष्य में ताजपोशी होगी। उसी का ही यादगार यह दीपावली है।

स्लोगन:- स्वराज्य अधिकारी बनना है तो मन रूपी मन्त्री को अपना सहयोगी बना लो।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

''बिन्दु और सिन्धु'' यह दो शब्द भी अगर याद रखो तो सम्पूर्णता सहज आ सकती है। एक बिन्दू की याद और एकरस अवस्था, एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार। सिर्फ बिन्दु और एक, उसके आगे विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है।